RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अक्टूबर 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, अक्टूबर 2021

चकमक

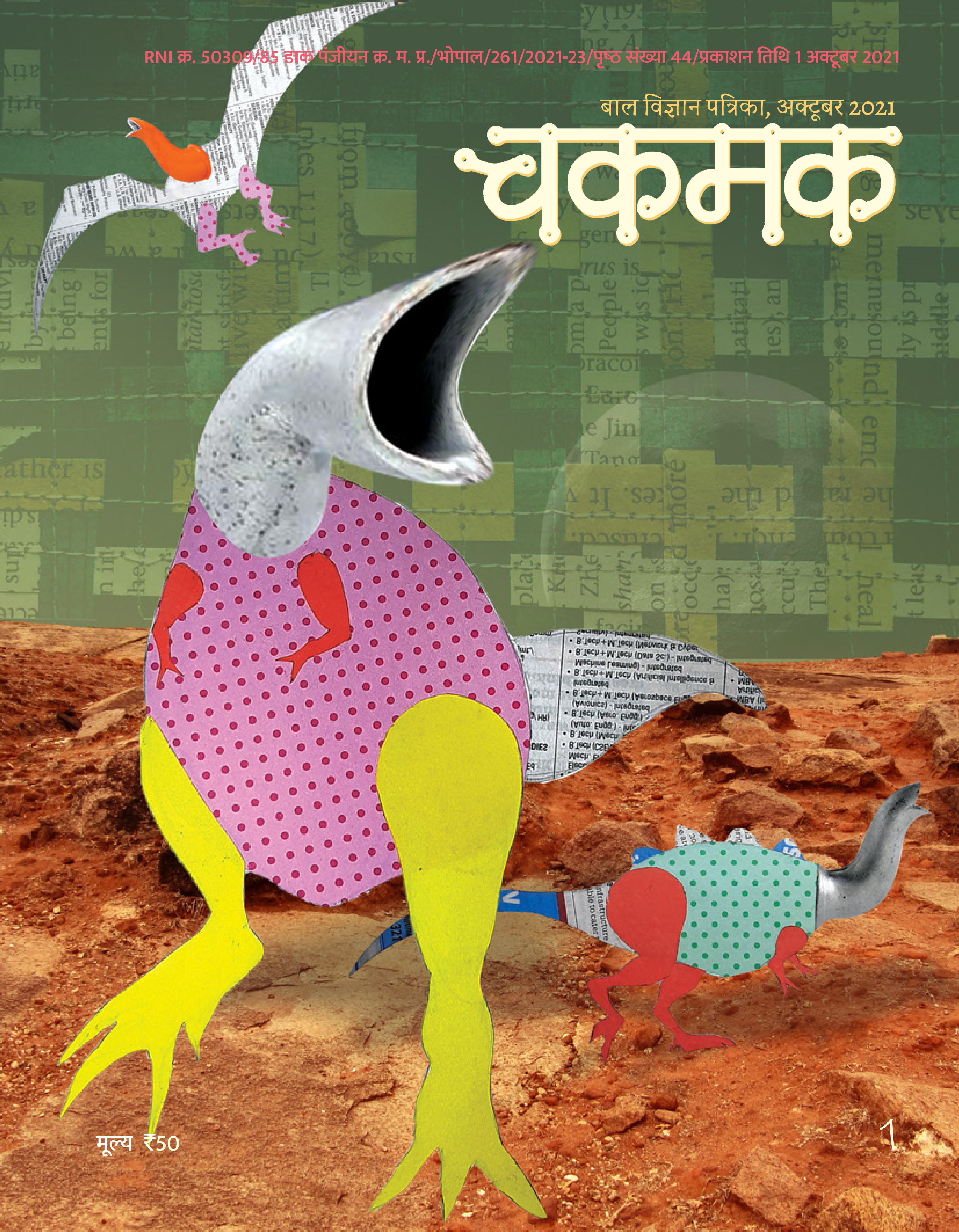

मूल्य ₹50

1

मेरा पन्ना

हमेशा की तरह इस बार भी नवम्बर अंक विशेषांक होगा। इसमें तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे।

तो मेरा पन्ना कॉलम के लिए अपनी लिखी/बनाई ऐसी रचनाएँ (कविता, कहानी, लेख, चित्र, पेंटिग आदि) भेजो जो तुमने अपने खुद के अवलोकन या कल्पना से रची हो। इसके अलावा नवम्बर अंक के लिए तुम इन विषयों पर भी लिख सकते हो:

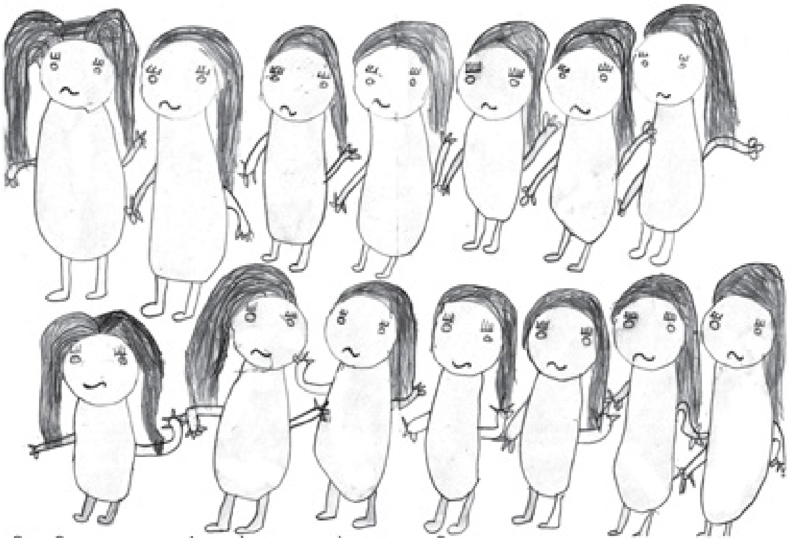

चित्र: शिवराज, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश, चकमक, सितम्बर 2015

मेरी बस का नम्बर

नाम, पता नहीं लिखा
चकमक, नवम्बर 2010

मेरी बस का नम्बर 11
हॉर्न देकर मुझे पुकारा
समय पर है आती-जाती
कभी ना हम को देर कराती

मेरा पन्ना

- हम सभी कभी ना कभी किसी काम/चीज़ से बचने के लिए बहाने बनाते हैं। तुमने भी कभी ना कभी ऐसा किया होगा। अपने ऐसे ही किसी बहाने के बारे में लिखो जो काम कर गया हो। चाहो तो चित्र या कॉमिक के ज़रिए भी इसे बता सकते हो।
- ऐसे बहुत-से लोग हैं जो रोज़मर्रा के जीवन में हमारी अलग-अलग तरह से मदद करते हैं, जैसे कि दूधवाले, सब्ज़ीवाली/सब्ज़ीवाले, अखबार वाले, किसी चीज़ की मरम्मत करने वाले, पलम्बर, मैकेनिक, घर में काम करने वाले आदि। इनमें से किसी के साथ भी एक छोटा-सा इंटरव्यू करो और हमें भेज दो। सम्भव हो तो उनकी फोटो भी खींचकर भेज सकते हो।
- जब तुम छोटे थे तो तुम्हारे बड़े लोग तुम्हें किस-किस तरह से डराते थे। लिखकर या चित्र बनाकर भेजो।
- इनके अलावा तुम मज़ेदार चुटकुले और माथापच्ची कॉलम के लिए पहेलियाँ व गणित के सवाल वगैरह भी भेज सकते हो।

तुम्हारे जवाब हम तक 10 अक्टूबर तक पहुँच जाएँ तो बहुत बढ़िया होगा। जवाब तुम chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो अथवा 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व पता ज़रूर लिखना।

तुम्हारी रचनाओं का इन्तज़ार रहेगा।

चकमक

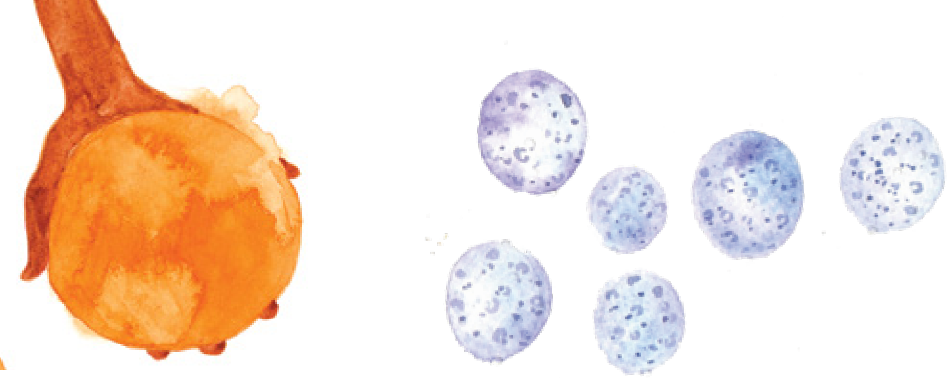

अंक 421 ● अक्टूबर 2021

चकमक

इस बार

भूलभुलैया - 4

माल्टे वाले बौड़ा जी - नेहा भाई - 5

क्यों-क्यों - 8

क्यों-क्यों - मेरा जवाब - सुशील जोशी - 9

तुम भी जानो - 11

तालाबन्दी में बचपन - छोटी-सी फरमाइश - नन्दनी - 12

चालीस अलग-अलग फलों वाला एक पेड़ - भाविनी पन्त - 16

उतनी बारिश - वीरेन्द्र दुबे - 19

नन्हा राजकुमार - एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी - 20

पृथ्वी पर कुल कितने टी. रेक्स थे - 24

गणित है मज़ेदार - सओरा संख्याएँ - आलोका कान्हेरे - 26

सफेद गुब्बारे - कमल - 28

मेरा पन्ना - 32

माथापच्ची - 38

चित्रपहेली - 40

जानवरों से सीखें इको फ्रेंडली दीवाली...- रोहन चक्रवर्ती - 44

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव
भाविनी पन्त

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

पहली कहानी

माल्टे वाले बौड़ा जी

नेहा भाई
चित्र: वसुन्धरा

सबकी पहली कहानी होती है। मेरी भी है। लेकिन पूरी नहीं, अधूरी पड़ी है। कक्षा आठवीं की कॉपी के एक फन्ने के दो फटे टुकड़ों में। आधे इधर, आधे उधर। हो सकता है कि सफाई वाली दीदी जी ने झाड़ू के साथ उड़ा दी हो। ये भी हो सकता है कि अलकनन्दा नदी पर बने पुल के उस छोर पर बैठी धूप सेक रही हो, जहाँ मैंने उसकी शुरुआत की थी।

हुआ ये कि रोज़ सुबह स्कूल जाते हुए मुझे अलकनन्दा नदी पर बने पुल को पार करना होता था। सीढ़ियों से उतरकर मकड़ी बाज़ार की सड़क और मकड़ी बाज़ार में मंगलू सब्ज़ी वाले के पास से पुल वाली सड़क तक उतरने में मैं बड़ी तेज़ी करती। सर्दियों में छाया वाले रास्ते बिलकुल अच्छे नहीं लगते। लेकिन पुल वाली सड़क पर पहुँचते ही मेरी गति धीमी हो जाती। वहाँ से धूप लग जाती और स्कूल पहुँचने तक रस्ते भर रहती। स्कूल में फिर गायब हो जाती। वहाँ आम, पीपल और बरगद के बहुत सारे पेड़ थे। तो दिन भर छाया रहती थी।

खैर पुल पर एक माल्टे वाले बौड़ा जी बैठते थे। उनके पास एक कट्टे में ये बड़े-बड़े माल्टे भरे होते थे। और दूसरे कट्टे पर कुछ माल्टे सजाकर रखे होते थे। मैंने एक बार अपने छोटे-छोटे पतले हाथों में एक माल्टा उठाया था। फिट नहीं बैठा, इतना बड़ा था।

मैं लगभग हर दूसरे दिन पुल के किनारे खड़े होकर अलकनन्दा नदी को देखने की एक्टिंग करती। पर मेरी तिरछी नज़र हमेशा माल्टे वाले बौड़ा जी पर ही होती। वह बीड़ी पीते थे। मुझे लगता था कि काफी दुखी हैं। उनके चेहरे पे एक निराशा का भाव रहता। एक बार मैंने उनसे पूछा, “बौड़ा जी आप कहाँ रहते हो?”

“माई की मण्डी में,” बौड़ा जी ने हँसते हुए कहा। और उनके भूरे-पीले दाँत दिखाई देने लगे।

बौड़ा जी ने कहा, “माल्टे चाहिए?” मैंने “ना” में सिर हिला दिया। बौड़ा जी समझ गए कि मेरे पास कुछ पैसा-लत्ता नहीं है। इसलिए वह दुखी होकर वापिस अपनी बीड़ी सुलगाने लगे। मुझे बड़ी आत्मग्लानि हुई जो मेरे चेहरे पर गरम-गरम महसूस होने लगी, धूप से भी ज़्यादा गरम। मैंने खामखाँ बौड़ा जी को माल्टे खरीदने का मुगालता दे दिया। उसके बाद बौड़ा जी बोले, “मुझे पता है बाज़ार में रुपए का माल्टा मिलता है। लेकिन इतना बड़ा थोड़ी मिलता है।”

मैं मुस्कराने की कोशिश करते हुए वहाँ से भाग गई। हाँफते-हाँफते स्कूल पहुँची तो देखा कि प्रार्थना के लिए बच्चे लाइन में लगे हैं। मैं भी चुपचाप आँखें बन्द कर लाइन के पीछे खड़ी हो गई। फिर पहली और दूसरी बेला यथावत चली। तीसरी बेला के अध्यापक आए नहीं थे। और सब बच्चे कुछ ना कुछ खुराफात करने में लगे थे। तभी गणित के मास्टर जी अन्दर घुसे।

वो दहाड़कर बोले, “समय का सदुपयोग करना नहीं आता?” मैंने सोचा, “क्या यार। अभी तो गणित पढ़ाकर गए थे। फिर से आ गए।” उन दिनों मेरा और गणित का छत्तीस का आँकड़ा चल रहा था। उस पर मास्टर जी बोले, “उसी चैप्टर से तीन सवाल और करो। कोई मुँह नहीं खोलेगा।” मैंने गणित की किताब निकाली और अंकों की गोल-गोल वाली जगहों पर स्याही भरने लगी।

तभी एक चटक महक सूं करके मेरी नाक को चिढ़ाने लगी। यह माल्टे की महक थी। छिलके का एक टुकड़ा फटते ही सैकड़ों स्वाद कणिकाएँ जैसे पूरी कक्षा में फैल गईं। माल्टे का स्वाद मुँह से ज़्यादा नाक में आता है। मैंने देखा मेरे पीछे बैठी लड़की बस्ते के अन्दर ही हाथ डालकर माल्टा छील रही थी। मुझे पीछे मुड़ा देख उसने रिश्वत के तौर पर माल्टे का छिलका पकड़ाया और सर हिलाकर माल्टा देने का भी संकेत किया।

सच कहूँ तो माल्टे का छिलका भी उतना ही स्वादिष्ट होता है, जितना कि फाँकें। बस बीज कड़वे होते हैं। छिलका खाते ही मुझे बौड़ा जी की याद हो आई। मैंने तुरन्त अपनी रफ कॉपी का डबल पेज फाड़ा। उसे दोहरा किया और एक चार पेज की पुस्तिका बनाकर

उसमें बौड़ा जी की कहानी लिखने लगी। वो मेरी पहली कहानी थी, जो कुछ इस तरह जा रही थी–

बौड़ा की कमर इतने सारे माल्टे उठाकर मुड़ गई थी।

सौ-डेढ़ सौ माल्टों को ढाई किलोमीटर दूर माई की मण्डी से पुल तक लादकर लाना और वो भी रोज़!

शायद उनका लड़का एकदम निकम्मा होगा जो बूढ़े बाप को रोज़ इतना चलकर आना पड़ता है।

मेरी कहानी में अभी विलेन की एंट्री हो ही रही थी कि मेरी सीट के आगे कक्षा के विलेन यानी की गणित के मास्टर जी आ गए। उन्होंने मेरी कहानी वाला कागज़ खींचा और मुझ पर चिल्लाने लगे, "ये टाइम पास हो रहा है खाली पीरियड में। ये कहानी लिखने से पास नहीं होते।" मेरी आँखें डबडबाने वाली थीं। गला सूख गया था। मुझे लगा कि एक बार फिर मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है। पहले बौड़ा जी को मुगालता देकर और दूसरे मास्टर जी के सामने पढ़ने का नाटक करके। उस ठण्डे कमरे में भी मुझे अपने गालों पर गर्मी महसूस होने लगी।

मास्टर जी ने कहानी वाले पेज़ के टुकड़े-टुकड़े कर ज़मीन पर पटक दिए। मैं किताब खोलकर अपनी जगह पर वापस बैठ गई और उन टुकड़ों को देखने लगी। लगता था कि माल्टे के कड़वे सफेद बीज फर्श पर बिखर गए हैं। और इस तरह मेरी पहली कहानी कक्षा आठ में ही छूट गई। मगर माल्टे की महक अब भी मेरी हर कहानी को ताज़ा करने में कोई कसर नहीं छोड़ती!

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

चोट लगने पर कभी गर्म सिकाई करते हैं तो कभी बर्फ लगाते हैं। ऐसा क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

मेरी माँ आलू काट रही थीं तभी चाकू से हाथ कट गया था। तभी ठण्डी बर्फ से सिकाई किए थे तो आराम मिला था। फिर डॉक्टर के पास गए तो डॉक्टर ने बोला कि खून बन्द हो गया। अब खतरे की कोई बात नहीं। गरम और बर्फ से सिकाई करना घरेलू उपचार होता है।

नीरज कुमार, तीसरी, अपना स्कूल, चिरैया सेंटर, बिहार

छोटे बच्चों को जब इंजेक्शन लगता है तो बर्फ से सिकाई करते हैं क्योंकि बच्चे छोटे होते हैं तो सभी को डर होता है कि गरम पानी से जल ना जाएँ। गरम पानी से सिकाई अक्सर ठण्ड के मौसम में चोट लगने पर करते हैं क्योंकि तब बर्फ की सिकाई से और भी ठण्ड लगेगी।

गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे लगता है कि जिन्हें अपने गुस्से की वजह से चोट लगती है उन्हें बर्फ की सिकाई करते होंगे क्योंकि वह खुद तो गरम ही रहते हैं। इसलिए उन्हें बर्फ की ठण्डी सिकाई से आराम मिलता होगा।

जिया गोयल, आठवीं, वेदान्त अकादमी, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

गरम सिकाई करने पर हमारा ब्लड सर्कुलेशन बढ़ जाता है। बर्फ लगाने से राहत मिलती है और जलन कम होती है।।

चक्षुल आर्य, दसवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

अगले अंक के लिए हम कोई सवाल नहीं दे रहे हैं। नवम्बर के विशेषांक में हम 'क्यों-क्यों' नहीं देंगे। लेकिन उसमें दिसम्बर के लिए सवाल ज़रूर देंगे...

चित्र: आस्था, छठवीं, मंगलम पब्लिक स्कूल, महादेव, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

एक बार मैं बारिश के पानी में नहा रहा था। अचानक बिजली ज़ोर-से कड़की तो मैं डरकर भागा। भागते वक्त मेरा पैर एक पत्थर से टकराया। इस कारन मेरे पैर में दर्द हो रहा था। मेरा पैर सूज गया था। तब मैंने आग से कपड़ा गरम करके मेरे पैर की सिकाई की। तब मुझे बहुत आराम मिला था। ये पुराने ज़माने का घरेलू उपचार है।

गणेशी कुमार, तीसरी, अपना स्कूल, चिरैया सेंटर, बिहार

मुझे लगता है कि चोट लगते वक्त जिन्हें ठण्ड लगती होगी वो गरम चीज़ से सिकाई करते होंगे और जिन्हें गर्मी लगती होगी वो बर्फ से सिकाई करते होंगे।

लक्ष्मी रत्नावत, आठवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मेरा जवाब

सुशील जोशी

तुम सब के जवाब लाजवाब हैं। जोड़-जाड़कर देखेंगे तो लगभग पूरी बात आ ही गई है। तो मैं इतना ही करूँगा कि थोड़ी कड़ियाँ जोड़कर इन्हें सिलसिलेवार जमा दूँ।

पहली बात तो यह है कि गरम सिकाई और ठण्डी सिकाई अलग-अलग तरह की चोट पर करते हैं। तो कैसे तय करें कि किस चोट की कैसी सिकाई करना चाहिए। इसके लिए यह देखना पड़ेगा कि गरम या ठण्डी सिकाई करने पर होता क्या है।

यह तो तुम जानते ही हो कि हमारे पूरे शरीर में खून की नलियाँ बिछी हुई हैं। यह भी तुम जानते ही होगे कि गरम करने पर किसी भी चीज़ का साइज़ बड़ा हो जाता है और ठण्डा करने पर चीज़ें सिकुड़ जाती हैं। तो जब कहीं गरम सिकाई करते हैं तो उस जगह की खून की नलियाँ थोड़ी फैल जाती हैं और उनमें से ज़्यादा खून बहने लगता है। बर्फ लगाने पर बिलकुल उलटा होता है।

जब हम धूप में निकलते हैं तो चमड़ी गरम हो जाती है और चमड़ी के नीचे की खून की नलियाँ फैल जाती हैं। उनमें से ज़्यादा खून बहने लगता है

और उसमें से पानी पसीने के रूप में निकलता है। पसीना निकलता है, हवा में उड़ जाता है और हमें ठण्डक महसूस होती है।

अब चोट की बात। जब चोट लगती है तो हो सकता है कि घाव हुआ हो और उसमें से खून बह रहा हो। ऐसे में यदि गरम सिकाई की तो वहाँ और ज़्यादा खून बहने लगेगा। इसलिए घाव वाली चोट पर गरम सिकाई नहीं करते क्योंकि हम नहीं चाहते कि और खून बहे। तो वहाँ बर्फ की सिकाई करते हैं ताकि खून की नलियाँ सिकुड़ जाएँ और खून कम बहने लगे। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि बाहर तो खून ना बह रहा हो, लेकिन खून की नलियाँ फूट गई हों और खून अन्दर ही अन्दर बह रहा हो। तब भी गरम सिकाई नहीं करना चाहिए। अक्सर जब अन्दर ही अन्दर खून बहने लगता है तो उस जगह पर सूजन आ जाती है। इसलिए चोट के बाद सूजन आ जाए तो गरम सिकाई नहीं करते। इंजेक्शन लगवाने पर ऐसा ही होता है। सुई की चुभन से उस जगह पर थोड़ा घाव तो हो ही जाता है। इसलिए इंजेक्शन की जगह पर गरम सिकाई से नुकसान हो सकता है। बहुत तकलीफ हो तो बर्फ रख सकते हैं।

फिर गरम सिकाई क्यों करते हैं। हमने देखा कि किसी जगह पर गर्मी दी जाए तो वहाँ की खून की नलियाँ फैल जाती हैं और उस जगह पर अधिक खून बहने लगता है। यह तो तुम जानते ही होगे कि खून के साथ ऑक्सीजन भी रहती है और पोषक पदार्थ भी। किसी जगह खून ज़्यादा पहुँचेगा तो वहाँ ऑक्सीजन भी ज़्यादा पहुँचेगी और पोषक पदार्थ भी। ये चीज़ें वहाँ की मांसपेशियों को राहत पहुँचाएँगी और यदि कोई टूट-फूट हुई होगी तो उसकी मरम्मत भी जल्दी हो पाएगी। भरपूर ऑक्सीजन और पोषण मिलेगा तो वहाँ की मांसपेशियों को काम करने में आसानी होगी। इसके अलावा यदि चोट के कारण (या किसी अन्य कारण से) वहाँ कुछ ऐसे पदार्थ जमा हो गए हैं जिनकी वजह से दर्द होता है, तो ज़्यादा खून बहने के कारण वे वहाँ से जल्दी बह जाएँगे। ज़्यादा मेहनत या कसरत करने से अक्सर ऐसा होता है और तब गरम सिकाई से आराम मिलता है। गर्मी का एक असर और होता है। उस जगह पर चल रही रासायनिक क्रियाएँ भी थोड़ी तेज़ चलने लगती हैं जिससे मरम्मत में मदद मिलती है।

गरम हो या ठण्डी, किसी भी सिकाई में ना तो गर्मी बहुत ज़्यादा होनी चाहिए, ना ठण्डक।

सामान्य समय पर
खून की नली

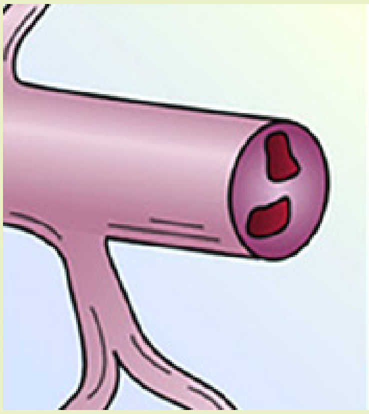

गरम सिकाई करने पर खून की नलियाँ थोड़ी फैल
जाती है और उनमें ज़्यादा खून बहने लगता है

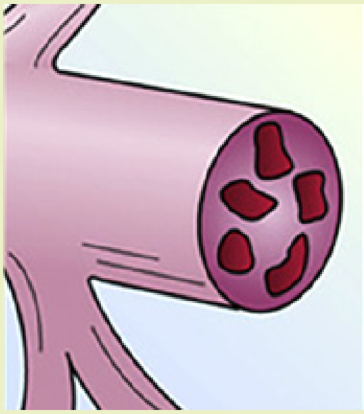

ठण्डी सिकाई करने पर नलियाँ
सिकुड़ जाती हैं

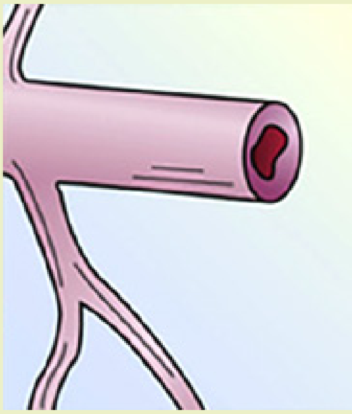

तुम भी जानो

Paleocolour, CC BY-SA 3.0 , via Wikimedia Commons

हमारे इलाके के कुछ डायनासौर

क्या तुम्हें पता है कि जिन इलाकों को हम आज राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और मेघालय कहते हैं वहाँ से हमें डायनासौर के जीवाश्म मिले हैं। ये जीवाश्म उनकी हड्डियों, अण्डों इत्यादि के हैं। इनमें से अभी तक का सबसे बड़ा डायनासौर *बर्रप्पासौरस टैगोराई* था जो 4 मीटर (यानी कि एक ड्यूप्ले घर जितना ऊँचा) लम्बा था। हमारे इलाकों में टी. रेक्स तो नहीं था लेकिन वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अब तक मिले डायनासौर में *राजसौरस नर्मदैनसस* सबसे भयावह रहा होगा। कुम मिलाकर अभी तक भारतीय सीमाओं के अन्दर कुछ 25-30 किस्म के डायनासौर के सबूत मिले हैं।

व्हेल ने थूक दिया इस आदमी को

लॉब्स्टर पकड़कर बेचने वाले माइकल पैकार्ड समुद्र में अपना काम कर रहे थे जब अचानक उन्हें लगा कि किसी ने उसे धक्का मारा है। फिर चारों ओर एकदम से अँधेरा हो गया। दरअसल वह किसी जीव के मुँह में थे! तुरन्त उन्हें समझ में आया कि दाँत नहीं हैं तो यह पक्का व्हेल ही होगा और वो अपने परिवार के बारे में सोचने लगे। वो व्हेल एक हम्पबैक व्हेल था। करीब आधे मिनट बाद उस व्हेल ने पानी से ऊपर उछलकर उन्हें थूक दिया। उनकी नाव पर मौजूद एक साथी ने यह होते हुए देखा और पानी से निकालकर उन्हें अस्पताल ले गया। उन्हें काफी चोट तो लगी लेकिन हड्डियाँ नहीं टूटीं। वो कहते हैं जितनी जल्दी हो सके वे पानी में वापिस जाएँगे।

छोटी-सी फरमाइश

बबीता के चेहरे की रंगत न जाने कहाँ चली गई। आँखें पीली और आँखों के नीचे काला घेरा होने लगा है। होंठ सूखे रहते हैं। इस कारण वहाँ पर हल्की लकीरें नज़र आती हैं। दुबले होने के कारण हाथों के ऊपर उभरी हरी-नीली नसें नज़र आने लगी हैं। चालीस साल की बबीता अभी से ही अपनी उम्र से दोगुनी उम्र की दिखाई देने लगी है। शरीर में खून की कमी तो है ही, आए दिन सरदर्द रहने के कारण माथे की लकीरें सिकुड़ने लगी हैं। अब वह सूट-सलवार ना पहनकर पजामा और टी-शर्ट पहनती है। दवा खाने के बाद की बेचैनी के कारण सूट नहीं पहन पाती। पहले वह काफी सुन्दर लगा करती थी।

कोरोना में बढ़ती हुई मौतों की खबर ने बबीता के मन में भय भर दिया है। तबीयत खराब होने की वजह से बबीता चिड़चिड़ी हो चली है। उसका मूड कभी-कभी बच्चे जैसा हो रहता है। आज भी चादर के एक कोने में सिमटी बबीता घर की दाहिनी दीवार से सटकर बैठी हुई थी। नन्दनी को घर बुहारते देख उससे बड़े ही प्यार से कहने लगी, “ए नन्दू... नन्दू सुनना... बेटा सुन...! मेरी एक बात मानेगी।” बबीता प्यार से नन्दनी को नन्दू कहती है।

नन्दनी

चित्र: कनक शशि

तालाबन्दी में बचपन

नन्दनी बबीता की छोटी लड़की है। बबीता के बीमार पड़ जाने से नन्दनी को सुबह से ही घर के कामों में लग जाना पड़ता है। पर घर है कि उसके सँभाले नहीं सँभलता। कमरे में आकर पलंग पर बैठते हुए नन्दनी गुस्से की नज़र से उसे देखती हुई बोली, “मम्मी, वैसे एक बात बोलूँ, जब से आप बीमार पड़ी हैं आपकी फरमाइशें आसमान छूने लगी हैं।” बबीता ने नन्दनी से एक छोटी-सी फरमाइश रखी थी कि उसे आलू के पराठे खाने हैं – वो भी गरमागरम। यह सुनते ही नन्दनी परेशान होने लगी। उसे ऐसा लगता कि मम्मी की ही वजह से उसे घर का सारा काम करना पड़ रहा है। अगर मम्मी ठीक रहतीं तो नन्दनी को इतना काम नहीं करना पड़ता। ऐसे भी लॉकडाउन में एहतियात बरतते हुए पूरा समय घर के काम और सब की देखरेख में ही निकल जाता है।

उसके मन में बार-बार यही खयाल आ रहा है कि पहले सब कितना अच्छा था। “मम्मी हर रोज़ सुबह उठाती थीं। चाय-नाश्ता कराती थीं। कभी पराठे तो कभी सैंडविच बनाती थीं। मैं नहा-धोकर स्कूल जाती थी। वहाँ से आने पर भी पढ़ लेती थी। शाम को खाना खाने के बाद सब के साथ घूमने भी जाती थी। मम्मी स्वस्थ थीं तो सब काम चुटकियों में निपट जाता था। अब तो घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता है।”

हाथों को ऊपर कर पैरों को फैलाते हुए शरीर की जकड़ी हुई हड्डियों को चटकाने के बाद बबीता बेहद मासूमियत से नन्दनी से बोली, “नन्दनी! बना दे ना बेटा! प्लीज़ बेटा! भूख लगी है! अब और मन नहीं करता नमक-पानी की दाल डली खिचड़ी खाने का। कभी पानी अलग दिखता है तो कभी चावल। स्वाद भी एकदम फीका लगता है। अब कुछ चटपटा खाने का मन कर रहा है।”

पहले से ही पसीने से तरबतर नन्दनी यह सुनकर और आग बबूला हो बोलने लग जाती है, “कोई पराठे-वराठे नहीं बनेंगे। आप देख नहीं रही हैं कितनी गर्मी हो रही है। इतनी गर्मी में कोई इन्सान कैसे गैस के पास खड़ा रह सकता है। यहाँ आटा, चावल, चीनी कम है। रोज़ थोड़ा-थोड़ा कर घर चलाना पड़ रहा है। खतम हो गया तो लाना भी मुश्किल हो जाएगा। और आपको अब पराठे खाने हैं। जाओ! मैं कोई पराठा-वराठा नहीं बनाती।” नन्दनी को गुस्से में देख बबीता की बचकानी-सी शक्ल पर उदासी का पर्दा गिर गया। नज़रों को नीचे कर बातों का छोर खोजते हुए बबीता ने कहा, “चल रहने दे, मत बना। हम तो बचपन से ही

“मम्मी, वैसे एक बात बोलूँ, जब से आप बीमार पड़ी हैं आपकी फरमाइशें आसमान छूने लगी हैं।” बबीता ने नन्दनी से एक छोटी-सी फरमाइश रखी थी कि उसे आलू के पराठे खाने हैं – वो भी गरमागरम। यह सुनते ही नन्दनी परेशान होने लगी। उसे ऐसा लगता कि मम्मी की ही वजह से उसे घर का सारा काम करना पड़ रहा है।

तुम्हारी सारी ख्वाहिशें पूरी करते आए हैं। कभी नहीं टोका, कभी कुछ नहीं कहा।”

कुछ देर के लिए लगा कि सब शान्त हो गया। उस माहौल में केवल पंखा अपनी खटर-पटर की आवाज़ के साथ चल रहा था। तपती दीवार से निकलती सीली गन्ध की भनक से परेशान, कमर को पकड़ते हुए बबीता ने शरीर से चादर उतार फेंकी। उसकी आँखों में हल्की-सी नमी उतर आई। धीरे-धीरे आँसू छलकने लगे। उसके सिसकने की हल्की-सी आवाज़ सुनकर वहीं पास में खड़ी नन्दनी की आँखें भर आईं। कई दिनों बाद नन्दनी ने अपनी मम्मी को सिसकते हुए सुना। वह शान्त हो सोचने लगी, “क्या यार नन्दनी, सारा गुस्सा तूने मम्मी पर उतार दिया। उनकी भला क्या गलती है। वह तो खुद ही बीमार हैं वरना वो तुझसे पराठे के लिए नहीं बोलतीं। और भूल गई क्या, पिछली बार जब तुझे बुखार-खाँसी हुआ था तब भी लॉकडाउन ही चल रहा था। तब भी मम्मी की तबीयत खराब थी पर तुझे दवा देकर उन्होंने सुलाया और खुद कमर को पकड़ते हुए नाश्ता बनाने, पानी, साफ-सफाई में अकेले लग गई थीं।” बबीता के कमज़ोर चेहरे को देख नन्दनी को अपनी गलती का एहसास हुआ।

हाथों को हिलाते हुए वैसे भी वो खा ही कहाँ पाती हैं, पूरे दिन में सिर्फ थोड़ी-सी दाल या दो मुट्ठी चावल। भला पेट क्या भरता होगा उससे! दवा भी इतनी कड़वी-कड़वी हैं। वो भी उन्हें ही झेलना है। अब हल्की साँस छोड़ते हुए नन्दनी रसोई की ओर बढ़ी। रसोई (जो बाहर का बरामदा ही है) में जीनों से ऊपर चढ़ सामने की ओर रखे बहुत पुराने एलजी के फ्रिज़ के निचले खाने में आलू रखे थे। नन्दनी फ्रिज़ की ओर बढ़ी और दो आलू निकालकर कुकर में डाल सीटी लगाने के लिए गैस पर चढ़ा दिया। डिब्बे से आखिरी तीन मुट्ठी बचा हुआ आटा निकाल उसमें से थोड़ा सूखा आटा अलग कर नन्दनी ने आटा गूँथना शुरू किया। सोने का बहाना करती बबीता हल्की-सी आँखें खोल नन्दनी को मशक्कत करते देख मन ही मन खुश हो रही थी।

नन्दनी ने आटा गूँथकर तैयार कर लिया। दो सीटी लगने के बाद हाथों से गर्म आलुओं को छीलते हुए उसने पराठे तैयार कर दिए। वह तेज़ गर्मी के कारण पसीने से लाल हो गई थी। नन्दनी के पसीने के कारण पराठों से निकलती धनिया, आलू, लहसुन, मसालों की खुशबू थोड़ी फीकी-फीकी सी लग रही थी। गैस चूल्हा साफ कर नन्दनी दो मग पानी डाल जल्दी से नहा भी आई। अब उसे बहुत तरोताज़ा महसूस हो रहा था।

आलू के पराठे की थाली लेकर नन्दनी कमरे की तरफ आई। देखा तो बबीता घर के सामने मोटे स्टील के बर्तन को एक हाथ से साफ कर रही थी। ऐसा करते देख नन्दनी माथे पर हाथ मारते हुए साँस छोड़ते

नन्दनी ने आटा गूँथकर तैयार कर लिया। दो सीटी लगने के बाद हाथों से गर्म आलुओं को छीलते हुए उसने पराठे तैयार कर दिए। वह तेज़ गर्मी के कारण पसीने से लाल हो गई थी। नन्दनी के पसीने के कारण पराठों से निकलती धनिया, आलू, लहसुन, मसालों की खुशबू थोड़ी फीकी-फीकी सी लग रही थी। गैस चूल्हा साफ कर नन्दनी दो मग पानी डाल जल्दी से नहा भी आई। अब उसे बहुत तरोताज़ा महसूस हो रहा था। आलू के पराठे की थाली लेकर नन्दनी कमरे की तरफ आई।

हुए सोचने लगी, बीमार हैं फिर भी मम्मी का सफाई किए बिना दिन ही नहीं गुज़रता। घर के राशन का भी खयाल रखती हैं। चिन्ता में बार-बार बबीता पूछने लगती कि दाल ले आई, सब्ज़ी ले आई! “ओफ्फो!!!” हाथों में कपड़े का छोटा-सा टुकड़ा लेकर नन्दनी ने अपनी मम्मी से कहा, “चलो, यहाँ लेटो, आपको कुछ भी करने की कोई ज़रूरत नहीं है।” यह सुनकर मुस्कराते हुए बबीता ने जवाब दिया, “तुम भी कितना करोगी बेटा नन्दू, मुझे करने दो।” नन्दनी ने बबीता को बैठने पर मजबूर कर दिया। बबीता का चेहरा फिर गुब्बारे की तरह फूल गया। “हमेशा अपनी मर्ज़ी करती है।” यह सुन नन्दनी ने हँसकर कहा, “मम्मी, मम्मी सुनो! माफ कर दो ना! लो बना दिए अब आपके लिए आलू के पराठे, जैसे आपने कहे थे।”

आँखों को खोलते हुए मुँह फुलाकर बबीता ने नन्दनी से कहा, “नहीं खाना कुछ मुझे। तुम जाओ यहाँ से।” यह सुनकर भी नन्दनी ने बबीता के पास बैठते हुए कहा, “देखो, इसकी खुशबू कितनी अच्छी आ रही है। मुँह में पानी आ रहा है। मैं खा लूँ क्या ये पराठे!” नन्दनी ठिठोली करते हुए बबीता को चिढ़ाने लगी। “हम्म... टेस्टी-टेस्टी आ... हा... हा... यम्मी... गोल-गोल आलू का पराठा। वो भी गरमागरम... ओहो! मैं तो खाने जा रही हूँ ये गरम पराठा।” बबीता का गुस्सा हल्का नरम पड़ने लगा। जब उसने आलू के पराठे देखे तो उसके मुँह में जैसे पानी आ गया हो। मुँह में पानी का घूँट लेते हुए बबीता ने कहा, “चल ठीक है! माफ किया।”

यह कहकर झट-से बबीता ने पराठे की थाल नन्दनी के हाथों से छीन ली और बाहर किचन में ले गई। नन्दनी के चेहरे पर बड़ी-सी मुस्कान छा गई। मुँह-हाथ धोकर बबीता पराठे खाने लगी।

नन्दनी सर्वोदय कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल, दिल्ली में बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह पिछले सात सालों से अंकुर से जुड़ी हैं। कहानी लिखना और लोगों की छोटी-मोटी मदद करना उन्हें पसन्द है।

एक कलाकृति

चालीस अलग-अलग फलों वाला एक पेड़

भाविनी पन्त

सोचो अगर तुम्हें अपनी पसन्द के अलग-अलग फल एक ही पेड़ में मिल जाएँ तो...? अमेरिका की सिराक्यूज़ यूनिवर्सिटी में एक ऐसा ही पेड़ है। साल भर तो यह पेड़ बाकी पेड़ों जैसा ही नज़र आता है – चौड़ा तना, टहनियों में लहराते पत्ते। लेकिन बसन्त के आते ही इस पेड़ की कायापलट हो जाती है। जहाँ बाकी पेड़ों में सारे फूल एक ही रंग के होते हैं, वहीं इसकी टहनियों पर लाल, सफेद और गुलाबी रंग के फूल नज़र आते हैं। और गर्मियों में इस पेड़ पर अलग-अलग फल नज़र आने लगते हैं। वो भी एक-दो नहीं, चालीस अलग-अलग किस्म के फल।

इस पेड़ को सैम वैन एकेन ने गढ़ा है। सैम सिराक्यूज़ यूनिवर्सिटी में कला के प्रोफेसर हैं। कला के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें इस पेड़ को गढ़ने की प्रेरणा दी। यह पेड़ उनकी एक जीती-जागती कलाकृति है। हुआ यूँ कि 2008 में सैम को पता चला कि न्यू यॉर्क में एक विशालकाय बगीचा तबाह होने वाला है। उस बगीचे में स्टोन फ्रूट की 250 किस्में थीं। स्टोन फ्रूट यानी ऐसे फल जिनका बीज फल के अन्दर एक पत्थरनुमा कड़क खोल में होता है। जैसे कि आड़ू, शफतालू, आलूबुखारा, खुबानी, चेरी, बादाम आदि। स्टोन फ्रूट की इतनी सारी किस्मों को देखकर सैम को इन्हें एक ही पेड़ पर संजोने का खयाल आया।

जब वे छोटे थे और अपने परिवार के साथ बागबानी करते थे, तो उन्हें

सैम वैन एकेन

कलम बाँधना बहुत रोचक लगता था। उन्होंने सोचा क्यों ना कलम बाँधकर एक ऐसे पेड़ को गढ़ा जाए जिसमें किस्म-किस्म के फल हों।

इसके लिए पहले सैम ने फूलों के रंग को ध्यान में रखते हुए पेड़ का एक स्केच बनाया। इस स्केच में उन्होंने एक रूपरेखा तैयार की कि किस पेड़ की कलम को कहाँ, कैसे जोड़ेंगे। इस रूपरेखा के आधार पर सैम ने यूनिवर्सिटी में एक मूल पेड़ पर कलम बाँधना शुरू कीं। वे बगीचे से चुने हुए स्टोन फ्रूट की एक ऐसी टहनी काटते जिसके सिरे पर कली होती। फिर डिज़ाइन के हिसाब से मूल पेड़ की टहनी पर चीरा लगाकर कली वाली टहनी को उस पर बाँध देते। इस तरह उन्होंने स्टोन फ्रूट की 40 किस्मों को इस एक पेड़ पर ‘गढ़’ दिया।

वैसे यह काम बहुत आसान नहीं है। इसके लिए यह ज़रूरी है कि पौधे ऐसे हों जो एक जैसी

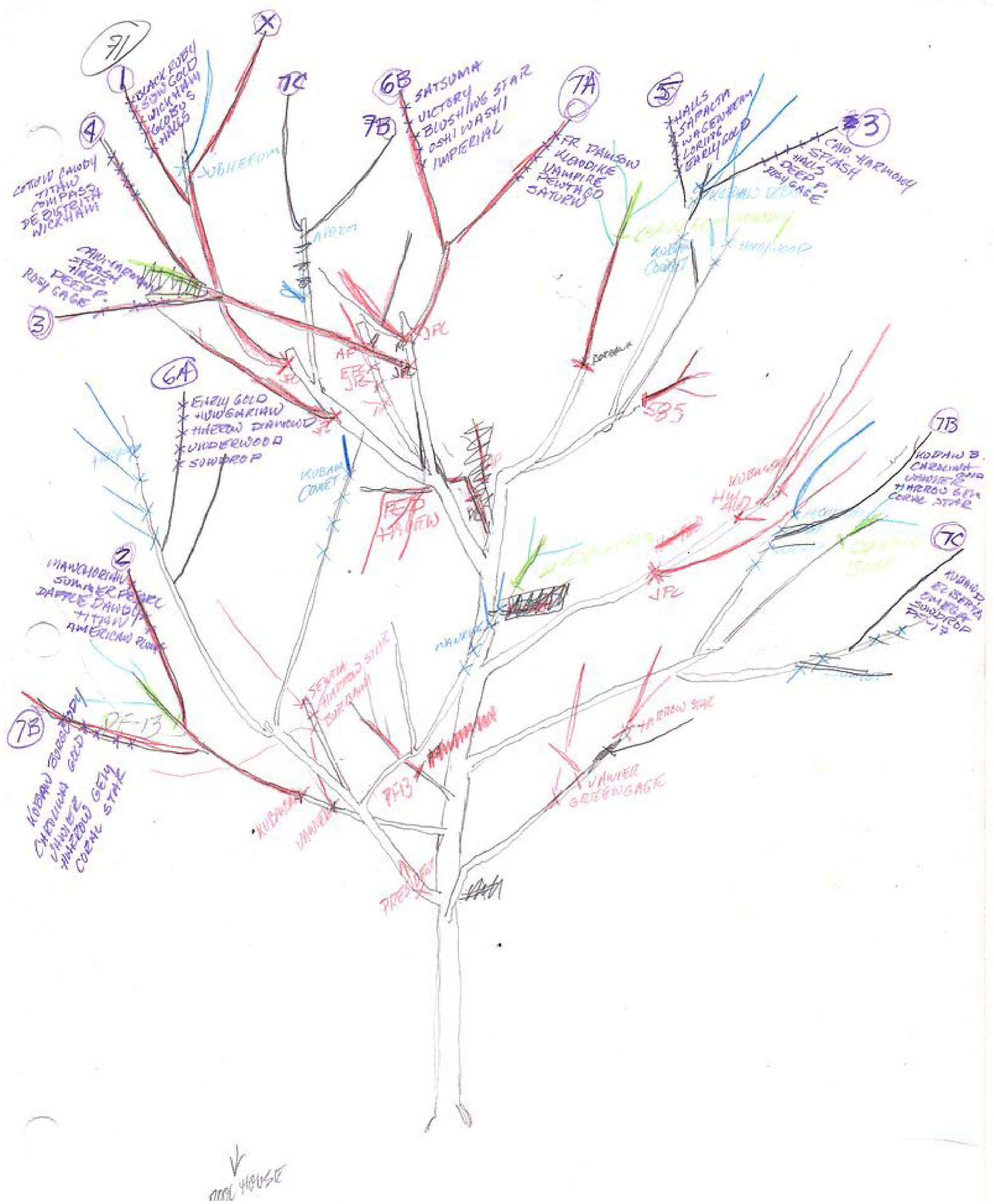

सैम वैन ऐकन, रॉनल्ड फैल्डमैन फाइन आर्ट के सौजन्य से https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=50264529

जलवायु और मिट्टी में उगते हों। शुरुआत में यह मालूम नहीं होता कि कौन-सी कलम ज़्यादा अच्छे-से उगेगी। इस काम के लिए बहुत ही सब्र की ज़रूरत होती है और कई सालों की मेहनत के बाद सैम की 'ट्री ऑफ फॉर्टी' की कल्पना साकार हुई। लेकिन सफल होने पर सैम केवल इसी पेड़ तक सीमित नहीं रहे। उन्होंने अमेरिका के कई और राज्यों में भी ऐसे पेड़ लगाए हैं।

उतनी बारिश

उतनी बारिश अभी ना आती
जितनी नानी कभी बताती
महिनों झड़ी लगा करती थी
रोके नहीं रुका करती थी
थाली भर-भर रोज़ पकौड़ी
दादी भली तला करती थी।

वीरेन्द्र दुबे
चित्र: प्रोइती रॉय

भाग - 4

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी
अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहाँ उसकी भेंट एक छोटे-से राजकुमार से हुई। और फिर परिचय का सिलसिला शुरू हुआ। राजकुमार ने बताया कि वह एक छोटे-से ग्रह का निवासी है। राजकुमार ने अपने ग्रह के बारे में और बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। अब आगे...

मैंने शीघ्र ही उस फूल के बारे में और अच्छी तरह जानना सीख लिया। नन्हे राजकुमार की दुनिया में पँखुड़ियों की एक ही लड़ी वाले सादे-से फूल होते थे जो थोड़ी-सी जगह में बिना किसी को असुविधा पहुँचाए उग आते थे। घास के बीच सुबह खिलते और शाम को मुरझा जाते थे। परन्तु राजकुमार का प्रिय फूल ऐसे बीज से अंकुरित हुआ था जो ना जाने कहाँ से उसकी धरती पर आ गया था। उसका अंकुर अन्य अंकुरों से अलग था। राजकुमार ने उसकी बड़ी तल्लीनता से देखभाल की थी। उसे डर था वह भी किसी दूसरे किस्म की बाओबाब की झाड़ी ना हो लेकिन उस पौधे का बढ़ना जल्द ही बन्द हो गया और लगा कि एक फूल खिलने वाला है। नन्हा राजकुमार, गदराई-सी कली को देखकर सोचता कि इसमें से निश्चय ही एक चमत्कार प्रकट होगा। लेकिन अपने हरे कोष्ठ की छाँव में पँखुड़ियों के परिधान चुनती, सजती उस कली का सौन्दर्य निखरता ही जा रहा था।

साधारण फूलों की तरह वह अपने सौन्दर्य को भरपूर जगमगाहट के पहले प्रकट नहीं होने देना चाहती थी। सच! बहुत शौकीन थी वह। साज-सज्जा कितने ही दिन चलती रही और फिर एक दिन उषा की पहली किरण के साथ वह अधखिली कली प्रकट हो ही गई।

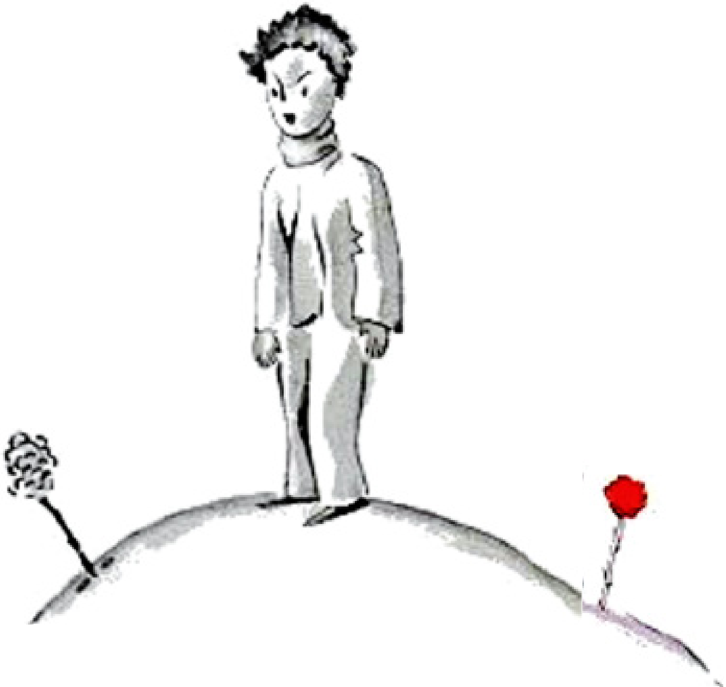

इतनी तैयारी के बाद उसने जम्हाई लेते हुए कहा, “ओह! मुश्किल से अभी-अभी जागी हूँ। क्षमा करना मैं अभी ठीक-से तैयार नहीं।” नन्हे राजकुमार की प्रसन्नता की सीमा ना रही।

“कितनी सुन्दर हो!”

“सच्ची!” अपनी मधुर आवाज़ में इतराकर वह कली बोली, “मैं सूरज के साथ ही जन्मी हूँ।”

“यह नाश्ते का समय है ना।” उसने फौरन कहा, “मेरा भी खयाल करोगे?”

और राजकुमार शरमा गया। उसने एक झज्झर ढूँढ़कर उसे ताज़े पानी से सींच दिया।

कुछ ही दिनों में उस फूल ने राजकुमार को अपने मान भरे अहंकार से परेशान कर डाला। उदाहरण के लिए एक दिन अपने चार काँटों की बात करते हुए उसने राजकुमार से कहा, “खूनी पंजों वाले बाघ भी आ जाएँ तो मुझे डर नहीं।”

“मेरे ग्रह पर बाघ नहीं होते और फिर बाघ घास थोड़े ही खाते हैं।” राजकुमार ने विरोध किया।

“मैं घास नहीं हूँ।” फूल ने धीरे-से कहा।

“क्षमा करना...”

“मुझे बाघ से नहीं पर हवा के झोंकों से डर लगता है। तुम्हारे पास आड़ करने के लिए पर्दा तो नहीं होगा?”

“हवा के झोंकों से डर... एक पौधे के लिए कोई अच्छी बात नहीं।” यह फूल सीधा-सादा नहीं लगता। राजकुमार ने सोचा?

“शाम को मुझे ढँक देना। यहाँ बहुत सर्दी पड़ती है। मुझे यहाँ चैन नहीं। जहाँ से मैं आई हूँ...”

उसे बीच ही में रुकना पड़ा। वह बीज रूप में कहीं और से आई थी और दूसरी किसी दुनिया के बारे में

एक दिन उसने धीरे-से मुझसे कहा, “मुझे उसकी बात नहीं सुननी चाहिए थी। फूलों को बस देखना और सूँघना चाहिए। उनकी बातें नहीं सुननी चाहिए। मेरे फूल ने संसार को सुगन्ध से भर दिया था पर मुझे पता नहीं था कि मैं इस सुख को कैसे भोगूँ। काँटों की बात, जिससे मैं चिढ़ गया था, वास्तव में उन बातों से मुझसे मृदुभाव पैदा होने चाहिए थे...”

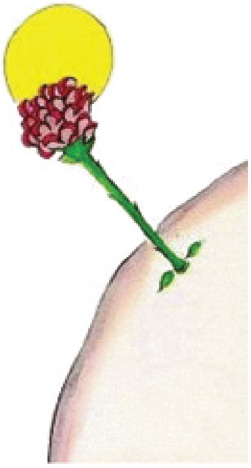

उसे कुछ पता नहीं था। उसने एक मूर्खतापूर्ण झूठ बोलना चाहा था। स्वयं से अपमानित होती हुई मानो राजकुमार को गलत साबित करने के लिए एक-दो बार खाँसती हुई बोली, “मैंने तुमसे पर्दा माँगा था ना!”

“जा रहा हूँ ढूँढ़ने... लेकिन तुम कुछ कह रही थीं!”

वह ज़बरदस्ती खाँसी थी ताकि राजकुमार को पछतावा हो।

इस प्रकार बावजूद इसके कि वह मन लगाकर उसकी सेवा कर रहा था उसने फूल पर सन्देह करना शुरू कर दिया। ऐसी ही कई बातों को बहुत महत्व दे देने के कारण वह दुखी था।

एक दिन उसने धीरे-से मुझसे कहा, “मुझे उसकी बात नहीं सुननी चाहिए थी। फूलों को बस देखना और सूँघना चाहिए। उनकी बातें नहीं सुननी चाहिए। मेरे फूल ने संसार को सुगन्ध से भर दिया था पर मुझे पता नहीं था कि मैं इस सुख को कैसे भोगूँ। काँटों की बात, जिससे मैं चिढ़ गया था, वास्तव में उन बातों से मुझमें मृदुभाव पैदा होने चाहिए थे...”

राजकुमार ने फिर आगे कहा, “मुझे बिलकुल समझ नहीं थी। मुझे उसके बारे में उसके शब्दों नहीं, उसके कार्यों के आधार पर निर्णय कर लेना चाहिए था। उसने मेरा सुख, मेरी समझ बढ़ाई थी। मुझे

इस तरह पलायन नहीं करना चाहिए था। उसकी कटी-कटी बातों के पीछे से झाँकती उसकी कोमलता, उसका प्यार देखना चाहिए था। कितना विरोधाभास होता है फूलों में लेकिन मेरी उमर ही क्या थी कि प्यार करना जानूँ।”

मैं सोचता रहा कि वह अपने ग्रह से निकला कैसे होगा। मैंने सोचा कि प्रवासी चिड़ियों के झुण्ड के साथ उड़ चला होगा। जिस दिन वह रवाना होने वाला था उसने सब ठीक-ठीक किया। अपने दो जीवन्त ज्वालामुखी चोटियों पर उसने झाड़ू लगाई। उनकी वजह से उसे सुबह का नाश्ता गरम करने में बड़ी सुविधा होती थी। एक सुप्त ज्वालामुखी भी था पर, पर कौन जाने...। उसने उसे भी झाड़कर ढँक दिया। ज्वालामुखी चिमनी की आग की तरह होते हैं। अगर उन्हें साफ करते रहा जाए तो बिना भड़के धीरे-धीरे सुलगते रहते हैं। पर इस धरती की बात और है। उनके सामने

हम इतने छोटे होते हैं कि उन्हें साफ करना या ढँकना सम्भव नहीं। इसीलिए तो कभी-कभी इतना उत्पात करते रहते हैं ये।

उसे थोड़ा दुख हुआ पर उसने बाओबाब के आखिरी झाड़ उखाड़े। वह सोचता था कि वह कभी लौटेगा नहीं पर ये रोज़मर्रा के काम करना उस दिन उसे बहुत अच्छा लगा। अपने फूल को ढँकने के पहले उसने आखिरी बार पानी दिया तो उसकी आँखें भर आईं। "अलविदा!" उसने फूल से कहा।

उसने जवाब नहीं दिया।

"अलविदा!" उसने दुहराया।

फूल ने खाँसा लेकिन वह सर्दी वाली खाँसी नहीं थी।

"मैं बहुत बुद्धू हूँ। मुझे क्षमा करना। खुश रहने की कोशिश करना।"

ना डाँट, ना फटकार – उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। ढक्कन लिए गुमसुम खड़ा रह गया। यह शान्त मिठास उसकी समझ में नहीं आई।

"मैंने तुझे बहुत प्यार किया," फूल ने कहा, "मेरी ही गलती थी कि तूने कुछ नहीं समझा। पर अब उससे क्या। लेकिन तुम भी मेरी तरह मूर्ख। खुश रहना... छोड़ो ढक्कन-वक्कन अब क्या होगा इसका।"

"लेकिन हवा...!"

"मुझे इतनी सर्दी नहीं लगी है... रात की ताज़ा हवा में मेरी तबीयत ठीक हो जाएगी। मैं फूल हूँ ना!"

"लेकिन जानवर..."

"अगर मुझे तितलियों को जानना है तो यह ज़रूरी है कि कुछ कीड़ों को भी जानूँ। नहीं तो कौन आएगा मेरे पास। तू... तो दूर रहेगा मुझसे। जहाँ तक बड़े जानवरों का सवाल है मुझे कोई डर नहीं... मेरे काँटे जो हैं।"

एक अल्हड़ की तरह उसने अपने चार काँटे दिखाए और कहा, "ऐसे ना खड़े रहो। मुझसे सहा नहीं जा रहा है जाने का निश्चय कर लिया है तो जाओ अब।"

उसकी आँखों के आँसू कोई देखे यह उसके स्वाभिमान को गँवारा नहीं था।

अगले अंक में जारी...

पृथ्वी पर कुल कितने टी. रेक्स थे?

एक अनुमान है कि क्रेटेशियस काल के दौरान किसी एक समय में लगभग 20,000 टी. रेक्स पृथ्वी पर जीवित थे। यानी किसी एक समय में मध्य प्रदेश के बराबर क्षेत्र में लगभग 3,390 टी. रेक्स घूमते थे।

जुरासिक पार्क फिल्म ने टी. रेक्स (*टायरेनोसॉरस रेक्स*) को घर-घर में पहुँचा दिया लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि कुल मिलाकर कितने टी. रेक्स पृथ्वी पर हुए होंगे?

हम यह तो जानते हैं कि टी. रेक्स के जीवाश्म (फॉसिल) बहुत कम मिलते हैं, लेकिन कितने कम? जानने के लिए यह पता होना ज़रूरी है कि वास्तव में पृथ्वी पर कितने टी. रेक्स थे। दो मापदण्डों के आधार पर इसका पता लगाया जा सकता है। पहला, जीव के शरीर का द्रव्यमान, और दूसरा वह कितने बड़े इलाके में पाया जाता है। इनके आधार पर टी. रेक्स के जनसंख्या घनत्व यानी कि इस बात का पता चल सकता है कि कितने बड़े इलाके में कितने टी. रेक्स थे।

जनसंख्या घनत्व के इस नियम पर पहली बार काम किया था कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (सैन्टा बार्बरा) के प्रोफेसर जॉन डेमथ ने। डेमथ का नियम कहता है कि किसी जीव के शरीर का द्रव्यमान

जितना अधिक होगा, उसका औसत जनसंख्या घनत्व उतनी कम होगी। यानी जितना बड़ा जानवर, उतनी कम उसकी कुल संख्या। किसी भी इलाके में देखो: चूहों की तुलना में कितने हाथी पाए जाते हैं?

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (बर्कली) के जीवाश्म विज्ञानी, चार्ल्स मार्शल की टीम ने डेमथ का नियम इस्तेमाल करके पता लगाया कि लगभग 6.6 करोड़ साल पहले (क्रेटेशियस काल के दौरान) पृथ्वी में कितने टी. रेक्स रहते थे। मार्शल की टीम ने अनुमान लगाया कि जिस जगह को हम आज ‘उत्तरी अमेरिका’ के नाम से पहचानते हैं उस इलाके में कितने टी. रेक्स रहे होंगे। इन आँकड़ों को टी. रेक्स के शरीर के द्रव्यमान के साथ तौलकर उन्होंने पाया कि किसी एक समय में लगभग 20,000 टी. रेक्स पृथ्वी पर जीवित थे। यानी किसी एक समय में मध्य प्रदेश के बराबर क्षेत्र में लगभग 3,390 टी. रेक्स घूमते थे।

टी. रेक्स की लगभग 1,27,000 पीढ़ियाँ पृथ्वी पर जीवित रहीं। मार्शल की टीम को पता था कि टी. रेक्स पृथ्वी पर 25 लाख सालों तक ज़िन्दा था। इस आधार पर उन्होंने अनुमान लगाया कि इस पूरे काल में पृथ्वी पर लगभग ढाई अरब टी. रेक्स रहे। हैरानी की बात यह है कि इतने सारे टी. रेक्स में से सिर्फ 32 टी. रेक्स के पूर्ण जीवाश्म मिले हैं। यानी 8 करोड़ टी. रेक्स में से हमें सिर्फ एक टी. रेक्स के पूर्ण जीवाश्म मिले हैं। (बाकी हड्डियाँ गई कहाँ?)

ढाई अरब टी. रेक्स के इतने कम जीवाश्म हमें मिले हैं। तो ऐसे डायनासौर जो टी. रेक्स की तुलना में बहुत कम संख्या में थे और कम समय के लिए थे या फिर कम द्रव्यमान के रहे होंगे, उनके जीवाश्म मिलने की सम्भावना तो और भी कम होगी। और हज़ारों साल पहले पृथ्वी पर क्या था उसका एकदम सीधा प्रमाण तो जीवाश्म ही देते हैं।

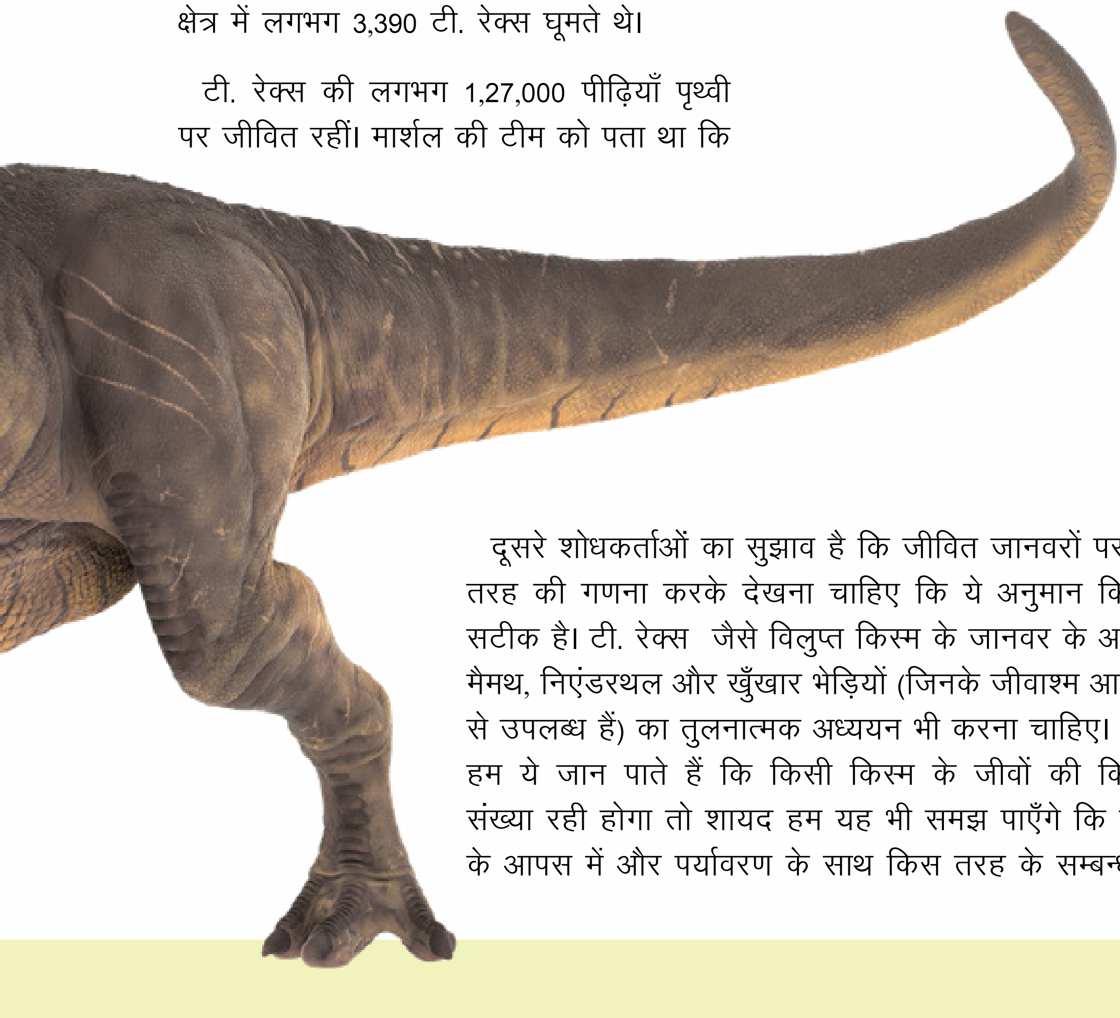

दूसरे शोधकर्ताओं का सुझाव है कि जीवित जानवरों पर इस तरह की गणना करके देखना चाहिए कि ये अनुमान कितना सटीक है। टी. रेक्स जैसे विलुप्त किस्म के जानवर के अलावा मैमथ, निएंडरथल और खुँखार भेड़ियों (जिनके जीवाश्म आसानी से उपलब्ध हैं) का तुलनात्मक अध्ययन भी करना चाहिए। अगर हम ये जान पाते हैं कि किसी किस्म के जीवों की कितनी संख्या रही होगा तो शायद हम यह भी समझ पाएँगे कि जीवों के आपस में और पर्यावरण के साथ किस तरह के सम्बन्ध थे।

सओरा संख्याएँ

आलोका कान्हेरे

हम सभी जानते हैं कि अलग-अलग लोग अलग-अलग संख्याओं के लिए अलग-अलग नाम इस्तेमाल करते हैं। जैसे कि दस को अँग्रेज़ी में *टेन* कहते हैं और मराठी में *दहा*। लेकिन केवल इनके नाम ही अलग नहीं होते, बल्कि संख्याओं के रूप में इनकी आकृति भी अलग-अलग 'दिखती' है। साथ ही इनका मतलब भी बदल जाता है।

जैसे कि हिन्दी में 39 को उनतालीस (या उनचालीस भी) कहते हैं। इसका मतलब होता है चालीस से एक कम। जबकि अँग्रेज़ी में 39 को *थर्टी नाइन* कहा जाता है जिसका मतलब तीस और नौ होता है। हिन्दी की तरह ही मराठी में भी 39 को *एकोणचालीस* कहा जाता है जिसका मतलब चालीस से एक कम होता है। क्या तुम कोई और भाषाएँ व उनमें संख्याओं के नाम जानते हो?

आज हम एक ऐसी भाषा में संख्याओं के नामों के बारे में जानने जा रहे हैं जिसे हम में से अधिकांश लोग नहीं जानते। वो भाषा है – सओरा भाषा। सओरा भाषा उड़ीसा में रहने वाले सओरा लोगों द्वारा बोली जाती है।

सओरा लोग उड़ीसा के गजपति ज़िले के वनीय इलाकों में रहते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार गजपति ज़िले में सओरा लोगों की कुल आबादी पाँच लाख के करीब है।

पारम्परिक रूप से ये लोग मिट्टी या पत्थर से बने छप्पर वाले छोटे घरों में रहते हैं। इनके घर नीची छत वाले होते हैं और बाहरी दीवारों पर आकर्षक पेंटिंग्स बनी होती हैं।

सओरा भाषा में शून्य से लेकर बारह तक तेरह बुनियादी संख्याएँ होती हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं।

संख्या	सओरा भाषा में नाम
0	आरीबा
1	अबय
2	बागू
3	यागी
4	उनजी
5	मलय
6	तुरू
7	गुलजी
8	तनजी
9	तिनजी
10	गलजी
11	गलमुए
12	मिगल

इन्हें ज़ोर-ज़ोर से बोलकर पढ़ने का अभ्यास करो।

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि तुम्हें ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

तेरह से उन्नीस तक की संख्याओं के नामों के लिए नियम यह है कि उस संख्या को *मिगल* (यानी 12) के साथ जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के लिए संख्या 13, संख्या 12 व 1 को मिलाने से बनती है। इसलिए तेरह को कहते हैं *मिगलबयो* [*मिगल* (12) + *बयो* (1)]। संख्या 14, संख्या 12 व 2 को मिलाने से बनती है तो उसे कहते हैं *मिगलबागू* [*मिगल* (12) + *बागू* (2)] आगे उन्नीस (जो कि *मिगलगुलजी* है) तक की संख्याओं को भी इसी तरह नाम दिया गया है।

सओरा भाषा में 15, 16, 17 व 18 के लिए संख्या-नाम लिखो।

19 के बाद बुनियादी इकाई होती है *कुडी*, जिसका मतलब होता है 20। अब बड़ी संख्याओं को बनाने के लिए *कुडी* का इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए 21 हो गया *कुडीआबय* (यानी कि 20 और 1) और 29 हो गया *कुडीतीनजी* (यानी कि 20 और 9)।

30 के लिए सओरा लोग *कुडीगलजी* (20 और 10) और 40 के लिए *बाकुडी* (2 गुना 20) का इस्तेमाल करते हैं। तुम्हें क्या लगता है 52 को क्या कहते होंगे? और 55 को?

100 के लिए सओरा भाषा का शब्द है *बसवा*। 1000 के लिए *बमाडिं* और 2000 के लिए *बागूमाडिं*। इसी तरह 4000 हो गया *उनजीमाडिं*।

पता करो कि सओरा भाषा में इन संख्याओं को क्या कहते होंगे?

1. बाईस (22)

2. साठ (60)

3. एक सौ पैंसठ (165)

4. पाँच हज़ार (5000)

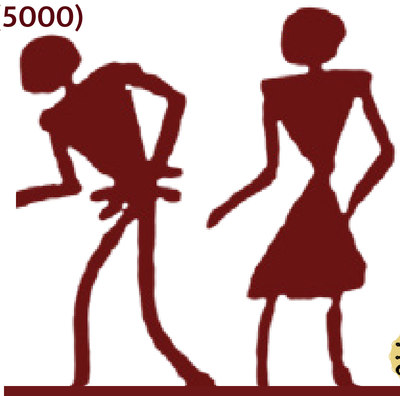

अनुवाद: कविता तिवारी

इस लेख को लिखने के लिए मैं उड़ीसा के अभय कुमार कर और डमरु सओरा का बहुत शुक्रिया अदा करना चाहूँगी। उनकी मदद से सओरा भाषा में संख्या-नामों का सही उच्चारण मैं समझ पाई।

सफेद गुब्बारे

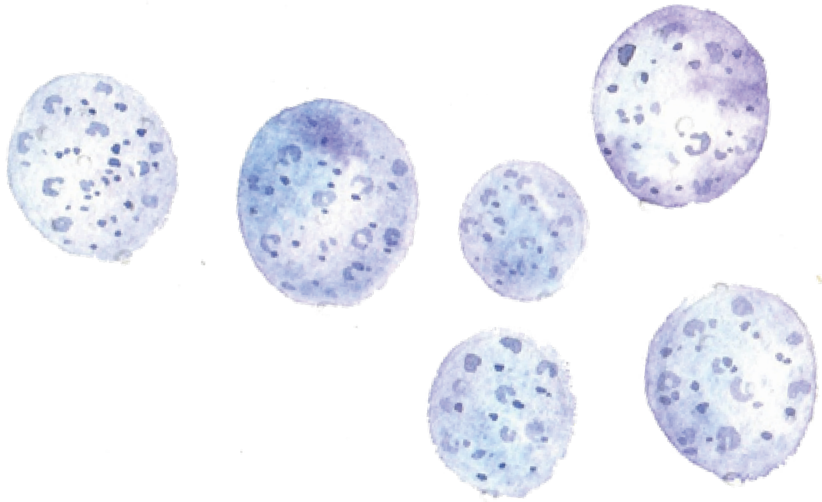

कमल
चित्र: शुभम लखेरा

अचानक से गुब्बारे मेरे चारों ओर मँडराने लगे! दूध जैसे रंग के, नुकीले, मेरे शरीर से भी बड़े। एक गुब्बारा मेरे मुँह में घुस गया। एक-एक करके वो मेरे मुँह में घुसे जा रहे थे। मैं चिल्लाना चाहता था। पर गला गुब्बारों से ठसाठस भर गया। उनकी नोक कई पिनों जैसी चुभ रही थीं।

मैं झटके के साथ उठ बैठा। चारों ओर घुप्प अँधेरा। लाइट जलाई। देखा, चादर पसीने से भीग गई है।

इतना भयानक सपना। ऐसे वक्त में मम्मी होतीं तो मैं उनके पास जाकर सो जाता। पर एक साल से तो घर में कोई नहीं है। मैं अकेला ही इतने बड़े घर में रह रहा हूँ।

रात भर डर लगता रहा। नींद नहीं आई। गर्मियों के दिन थे। सुबह पाँच बजे ही खिड़कियों से बाहर उजाला दिखने लगता है। पर आज कुछ समझ नहीं आ रहा था। सुबह है या शाम हुई है? मैं उठा, मुँह धोया और छत पर पहुँच गया। बगल के घर की छत पर देखा। नूरानी जी टहल रहे हैं। उनसे बात करने के लिए मुँह खोला ही था कि याद आया वे तो मुझसे नाराज़ हैं। अभी कल ही की तो बात है। वे बोले थे, “इतने लोग मर रहे हैं और सरकार कुछ नहीं कर रही है!” मैंने कहा, “प्रधानमंत्री जी भी कुछ नहीं कर रहे हैं।” मेरी बात सुनते ही उनका मुँह लाल हो गया था और मेरा मुँह खुला का खुला रह गया था।

शब्द थे कि गले में आकर अटक गए। सपने का डर अभी भी था। किससे बात करूँ? मम्मी को फोन लगाऊँ? नहीं-नहीं, वो तो डर जाएँगी। मैंने जब मम्मी को कोरोनावायरस का फोटो दिखाया था तो वो कहने लगी थीं, “हाय! कितना बड़ा है ये!” मैंने कहा, “मम्मी यह बहुत छोटा है, इतना कि खुली आँखों से तो दिखता भी नहीं है। कब नाक में घुस जाए और पता भी ना चले!” वो मुझसे यह भी कह सकती थीं, “कैसा लड़का है, अठारह साल का हो गया और ऐसे डरता है!”

मैंने घर के पीछे वाली छत को देखा। वहाँ भी कोई नहीं था। फिर मैं आकाश को देखने लगा। काले-घने बादल। उन्हें देखकर मेरा खौफ और बढ़ गया। लगा जैसे कोरोनावायरस के बड़े-बड़े गुब्बारे उड़ रहे हों!

हमारे घर के बाईं ओर नूरानी जी का घर है। उसके आगे छह मंज़िल की एक बिल्डिंग है। उस बिल्डिंग में अब कोई नहीं रहता है। परसों ही वरुण ने बताया था कि वहाँ कोई नहीं जाता है। सब डरते हैं। मैं भी डर गया और उस दिन से उस बिल्डिंग की तरफ देखता भी नहीं!

वरुण तेरह साल का है। पर इन दिनों वो ही मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। वो हमारे पीछे वाले घर में रहता है। शाम को उसके पापा छत पर होते हैं। उस वक्त वरुण छत पर नहीं आता है। आ जाए तो उसकी खैर नहीं! उसके पापा

कड़ककर बोलते हैं, “क्या करने आया है? पढ़ेगा नहीं? चल नीचे।” वरुण उदास मुँह लिए धीरे-धीरे नीचे चला जाता है।

खर्र... खर्र, रात दस बजे वरुण को पापा के खर्राटे सुनाई पड़ते। वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर आ जाता। फिर हम देर रात तक बातें करते।

अभी जब मेरी बहुत इच्छा थी कि किसी को अपने सपने की बात बताऊँ, उसी वक्त मैंने सीढ़ियों से वरुण को आते देखा। वो मरी हुई चाल से चलकर आ रहा था। छत पर आते ही उसने कहा, “भैया, अच्छा होता मुझे कोरोना हो जाता और मैं मर जाता!” मैंने कहा, “अरे! सुबह-सुबह ऐसी बात क्यों कर रहा है? क्या हो गया?”

“क्या भैया! एक साल हो गया घर में पड़े-पड़े। चार-पाँच घण्टे ऑनलाइन क्लास ज्वॉइन करो। फिर पापा की डाँट सुनो। माँ भी अपने स्कूल के बच्चों के साथ पाँच-छह घण्टे ऑनलाइन क्लास करती हैं। बहुत थक जाती हैं। पर फिर भी घर का काम करती हैं! उनके पास मेरे लिए बिलकुल टाइम नहीं है। दीदी क्लास खतम करते ही फोन पर व्यस्त हो जाती हैं।

“क्या भैया! एक साल हो गया घर में पड़े-पड़े। चार-पाँच घण्टे ऑनलाइन क्लास ज्वॉइन करो। फिर पापा की डाँट सुनो। माँ भी अपने स्कूल के बच्चों के साथ पाँच-छह घण्टे ऑनलाइन क्लास करती हैं। बहुत थक जाती हैं। पर फिर भी घर का काम करती हैं!”

इससे तो स्कूल में ही अच्छे थे। दोस्तों से बातें तो करते थे।” तभी उसके पापा की कड़क आवाज़ आई, “वरुण... नीचे आ।” वरुण भागा। मैं भी नीचे लौट आया।

आज पूरा दिन मैं सोचता रहा। चार कमरे, दो हॉल, दो रसोई और पाँच बाथरूम के इतने बड़े घर में मैं अकेला रह रहा हूँ। मम्मी दूसरे शहर में नौकरी करती हैं। पापा गाँव में खेती-बाड़ी के काम में खटते रहते हैं। पहले तो वे

हर सप्ताह दो दिन मेरे साथ रहते थे। बाहर दोस्तों के साथ भी खूब रहता था। एक साल हो गया घर में अकेले पड़ा हूँ। ना कोई घर आता है, ना ही मैं घर से बाहर जा सकता हूँ।"

पूरा दिन मुझे गुस्सा आता रहा। ना खाना बनाया, ना नाश्ता। शाम हुई छत पर गया और टहलने लगा। अचानक देखा वरुण भी छत पर आ गया है। बड़ा खुश-खुश बोला, "आज पापा छत पर नहीं आएँगे। उन्हें बुखार है, सो रहे हैं।"

मैं सुबह बता नहीं पाया था तो अभी अपने सपने की बात बताने लगा। अचानक पीठ पर ज़ोर-से मुक्का मारने की आवाज़ ने डरा दिया था। देखा वरुण के पापा आ गए हैं। मैं देख रहा था। वरुण की पीठ पर धड़ाधड़ मुक्के पड़ रहे थे। मैं धूज रहा था, कुछ डर और कुछ गुस्से से।

वरुण रोता, चीखता नीचे भागा।

अब मैं अपनी छत की डॉली के पास और वरुण के पापा अपनी छत की डॉली के पास थे। वे मेरी तरफ गुस्से से देखते हुए बोले, "अरे हरामखोर खुद तो कुछ करता नहीं, मेरे बेटे को भी बिगाड़ेगा!"

मेरे हाथ-पैर पहले ही काँप रहे थे। अभी और तेज़ काँपने लगे। मन कर रहा था एक झन्नाटेदार थप्पड़ वरुण के पापा के गाल पर जड़ दूँ!

मैं नीचे कमरे में आ गया। मुझे उन गुब्बारों की याद आई। मेरे शरीर से भी बड़े। दूध जैसे रंग के, नुकीले! जी घबराने लगा। आती हुई रात का डर सताने लगा...

पूरा दिन मुझे गुस्सा आता रहा। ना खाना बनाया, ना नाश्ता। शाम हुई छत पर गया और टहलने लगा। अचानक देखा वरुण भी छत पर आ गया है। बड़ा खुश-खुश बोला, "आज पापा छत पर नहीं आएँगे। उन्हें बुखार है, सो रहे हैं।"

सोचा ना था

तनिष्का
नौवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, हिमाचल प्रदेश

क्या कभी सोचा था
ऐसे भी दिन आएँगे
महामारी के कारण
सब घर में बन्द हो जाएँगे

छुट्टियाँ होंगी ढेर सारी
पर कहीं जा नहीं पाएँगे
शुद्ध होगी हवा मगर
खुलकर साँस नहीं ले पाएँगे

घर से जो दूर होंगे
उन्हें बुला नहीं पाएँगे
और जो पास होंगे उन्हें
गले भी लगा नहीं पाएँगे

कैसे मुस्कराएगा कोई
जब मुँह मास्क से ढँक जाएँगे
कभी सोचा नहीं था
ऐसे भी दिन आएँगे

मेरा पन्ना

कोरोना काल में हिम्मत

राजवीर चौहान
आठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

कोरोना काल में गरीबी छाई थी। तभी घर के मालिक ने किराया ना देने के कारण घर से निकाल दिया। पैसे ना होने के कारण पूरे परिवार को गाँव जाना पड़ा। हम दादा जी के पास चले गए। हम पूरा समय हमारे खेत पर ही बिताते। हमने सोयाबीन बोई थी। पापा को डर था कि पानी नहीं आया तो फसल सूख जाएगी। पहले दिन पानी नहीं बरसा, दूसरे दिन भी नहीं और तीसरे दिन भी नहीं। पर पापा ने हिम्मत नहीं छोड़ी। चौथे दिन जब पानी बरसा तो मुझे पानी की बूँदें पैसों की तरह दिख रही थीं। बाद में हमने सोयाबीन बेचा और मकान का किराया दे दिया।

चित्र: अनिका हरितास, दूसरी 'ए', द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

चित्र: वैदिक गर्ग, छठवीं, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

मेरी भीमताल यात्रा

काव्या उपाध्याय
दूसरी, द हेरिटेज स्कूल
वसन्त कुंज, दिल्ली

इस साल मार्च में की गई अपनी भीमताल यात्रा के बारे में लिखने को लेकर मैं बहुत उत्साहित हूँ। 15 मार्च 2021 का दिन था। उस दिन मेरे दिन की शुरुआत बहुत जल्दी हुई – सुबह 5 बजे। हमें पौने पाँच बजे निकलने वाली काठगोदाम एक्सप्रेस पकड़नी थी। काठगोदाम का हमारा सफर लगभग 6 बजे शुरू हुआ।

1 बजे के आसपास की बात है। हम भीमताल पहुँचने को लेकर बहुत उत्साहित थे। तभी बारिश शुरू हो गई। फ्रेडी के बंगले तक जाने के लिए हमने टैक्सी ली। वहाँ कॉटेज के मालिक की चार साल की बेटी श्याला से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई थी। टेस्टी लंच करने के बाद मैं अपने मम्मा-पापा के साथ पहाड़ की चोटी पर ट्रेकिंग करने गई। चोटी से सब कुछ बहुत सुन्दर दिखाई दे रहा था। वहाँ से मैं भीमताल लेक के साथ ही पूरा भीमताल भी देख पा रही थी। फिर वापिस लौटकर हमने शाम का नाश्ता किया। रात में खाना खाने के बाद हमने बैडमिंटन खेला। मुझे इनडोर गेम्स बहुत पसन्द हैं। कॉटेज में मैंने विभिन्न तरह की तितलियों के मॉडल भी देखे।

अगले दिन हम नैनीताल और सातताल देखने जाने वाले थे। वहाँ सबसे पहले हम केव गार्डन देखने गए। वहाँ जाना जितना दिलचस्प था,

मेरा पन्ना

उतना ही डरावना भी था। केव गार्डन में अलग-अलग तरह के जंगली जानवरों की गुफाएँ हैं, जैसे कि टाइगर केव, पैंथर केव, चमगादड़ केव, साही केव आदि। मम्मा और मैं केवल टाइगर केव में ही गए। केव के अन्दर चलना बहुत ही मुश्किल था। मैं और मम्मा सोच रहे थे कि टाइगर कितना स्मार्ट है जो इतने संकरे-से रास्ते में चल पाता है। फिर हमने एक कैफे में लंच किया। हम रोप-वे गए और पहाड़ की चोटी से हमने पूरा नैनीताल देखा। हमने शिकारा में बोटिंग भी की। बोटिंग करने में मुझे बहुत मज़ा आया।

फिर हम सातताल गए। वहाँ हमने कायक में बैठकर बोटिंग की। मैं मम्मा के साथ बैठी थी। मुझे बहुत ही मज़ा आया। अगले दिन हम नौकुचियाताल गए। भीमताल की अपनी इस ट्रिप में मुझे बहुत मज़ा आया। नैनीताल में अलग-अलग डिज़ाइन की खुशबू वाली मोमबत्तियाँ मिलती हैं। तो मैंने वहाँ से अपने रिश्तेदारों के लिए मोमबत्तियाँ भी खरीदीं।

चित्र: सुरगी, पाँच वर्ष, स्टूडिया रनिंग स्टिच, बेंगलुरू, कर्नाटका

चित्र: हवन, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

आग

गौरी मिश्रा
चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे घर के पास एक झोपड़ी थी जिसमें रहने वाले लोग एक ढाबा चलाते थे। एक रात को उनकी झोपड़ी में आग लग गई। फायर ब्रिगेड को भी खबर दी गई। लेकिन फायर ब्रिग्रेड के आने तक सब कुछ जल चुका था। बस अच्छी बात यह थी कि उस झोपड़ी में रहने वाले सभी लोग आग से बचकर बाहर निकल गए थे। महल्ले के सभी लोगों ने आग बुझाने में मदद की थी। नहीं तो आग पूरे महल्ले में फैल जाती। दूसरे दिन मेरे पापा ने उन लोगों की मदद के लिए रुपए दिए। लेकिन उन लोगों ने नहीं लिए। फिर महल्ले के सब लोगों ने मिलकर उनका ढाबा दुरुस्त करवाया।

मेरा कुत्ता

समीर खान
तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला
धर्मश्री, सागर, मध्य प्रदेश

मैं एक मैदान में अपने दोस्तों के संग खेल रहा था। खेलते-खेलते मुझे एक कुत्ता मिला। उसे चोट लगी थी। मैंने सोचा डॉक्टर के पास ले जाऊँ। पर मेरे पास पैसे नहीं थे। मैं घर गया। अपनी गुल्लक फोड़ी। उसमें से जो पैसे निकले उससे कुत्ते की दवा कराई। फिर दो-चार दिनों में वो ठीक हो गया। वो मेरा दोस्त बन गया। मैं उसे रोज़ दूध-रोटी खिलाता हूँ। वो भी मेरा खयाल रखता है।

चित्र: शानवीर, दूसरी, गुरु रामदास पब्लिक हाईस्कूल, पना, सिरसा, हरयाणा

माथापच्ची

1. दी गई ग्रिड में कुछ शहरों के नाम छुपे हुए हैं। देखो, तुम कितने ढूँढ़ पाते हो...

सु	झा	बु	आ	रा	सू	भो	पा	ल
म	ना	अ	ग	र	त	ला	धा	नी
ल	भो	ल्मो	रा	य	पु	र	पा	शि
हा	व	ड़ा	ज	ग	री	त	म	ल
गु	ड़ो	उ	को	हि	मा	ला	री	वा
ल	द	द	ट	ले	ह	म	थु	रा
ब	रा	य	ब	रे	ली	ना	ग	णा
र्ग	सो	पु	णे	च्चि	दि	ली	द	सी
इ	न्दौ	र	को	ल	का	ता	भिं	ड

2. क्या तुम किसी भी और चिह्न का इस्तेमाल किए बिना इस समीकरण को सही कर सकते हो?

8 + 8 = 91

3. राशि ने एक कागज़ पर 2 अंकों की एक संख्या लिखी। जब उसने कागज़ को उलटकर देखा तो वह पहली वाली संख्या से 75 कम हो गई थी। बताओ कि राशि ने कौन-सी संख्या लिखी थी?

4. सीरीज़ के पैटर्न को समझकर आगे की संख्याएँ लिखो।

A) 17 15 13 11 9 7 ......

B) 20 26 32 38 44 50 ......

C) 19 36 53 70 87 104 ......

D) 10 11 13 16 20 25 ......

5. क्या तुम इस डायनासौर की सही परछाईं पहचान सकते हो?

6.

क्या तुम नीचे दिए गए तीन टुकड़ों को उलट-पुलट कर जोड़कर दिए गए चित्र को पूरा कर सकते हो?

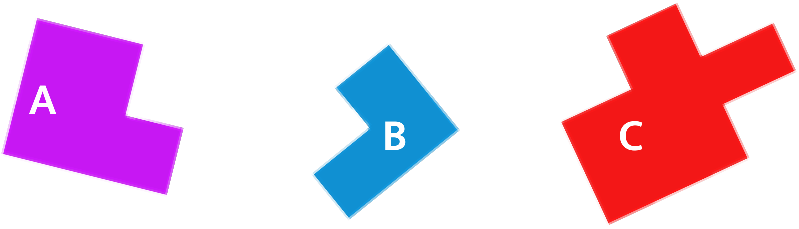

7.

चित्र में दी गई कौन-सी संख्याओं को जोड़कर तुम सबसे बड़ा योगफल ला सकते हो? तुम किसी भी संख्या से शुरू कर सकते हो। पर यह ध्यान रखना कि पाँचों संख्याएँ एक ही पथ पर होनी चाहिए और तुम ना तो किसी संख्या पर वापिस लौट सकते हो और ना ही किसी संख्या को छोड़कर आगे बढ़ सकते हो।

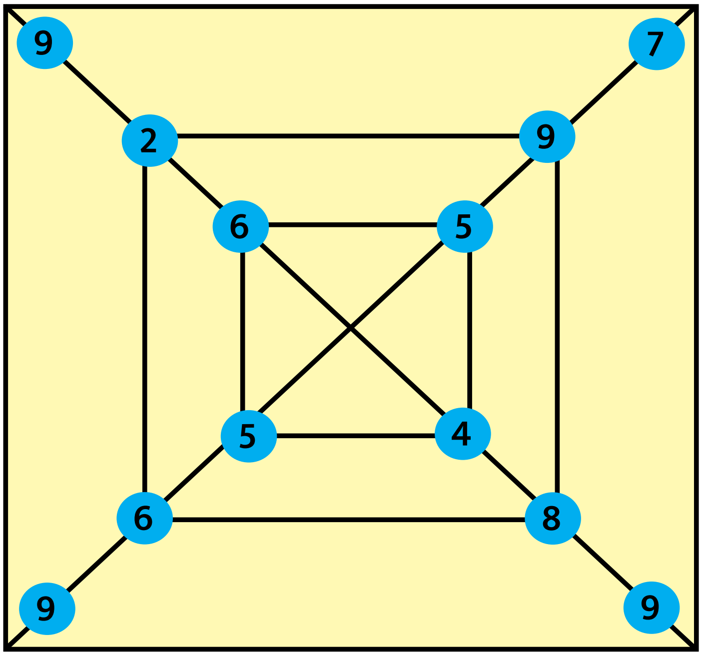

फटाफट बताओ

चाय गरम है, गरम है पानी
दूध गरम घण्टे बीते।
चाहे दिन हो, रात हो चाहे
बड़े मज़े-से सब पीते।

(केतली)

एक साथ आए दो भाई
बिन उनके दूर शहनाई
पीटो तब वह देते संगत
फिर आए महफिल में रंगत

(तबला)

दो पैरों का मैं हूँ घोड़ा,
चलता हूँ पर थोड़ा-थोड़ा
जो भी मेरे बीच में आया
झट-से काटा, फट-से तोड़ा

(कैंची)

बिल्ली की पूँछ हाथ में,
बिल्ली रहे इलाहाबाद में

(पतंग)

जो तुझ में है, वह उसमें नहीं
जो झण्डे में है, वह डण्डे में नहीं

('झ')

चित्र पहेली

	2			5				7
							5	3
5		3	6		7	2	8	9
	7	1	2	4	5			8
	9	4			8			
2				3			4	6
7	1	2		8				4
4		6	9	2		8		
9	5			7	4		2	

सुडोकू 47

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1.

सु	झा	बु	आ	रा	सू	भो	पा	ल
म	ना	अ	ग	र	त	ला	धा	नी
ल	भो	ल्मो	रा	य	पु	र	पा	शि
हा	व	ड़ा	ज	ग	री	त	म	ल
गु	ड़ो	उ	को	हि	मा	ला	री	वा
ल	द	द	ट	ले	ह	म	थु	रा
ब	रा	य	ब	रे	ली	ना	ग	णा
र्ग	सो	पु	णे	च्चि	दि	ली	द	सी
इ	न्दौ	र	को	ल	का	ता	भिं	ड

2. 8+8 = 16

3. राशि ने 91 लिखा था। जब उसने कागज़ को उलटकर देखा तो 16 संख्या दिखी।

4.

A) 17 15 13 11 9 7 5 (2 घटाते हुए बढ़ेंगे)

B) 20 26 32 38 44 50 56 (6 जोड़ते हुए बढ़ेंगे)

C) 19 36 53 70 87 104 121 (17 जोड़ते हुए बढ़ेंगे)

D) 10 11 13 16 20 25 31 (आगे 1, 2, 3, 4, 5...इस तरह जोड़ते हुए बढ़ेंगे)

5.

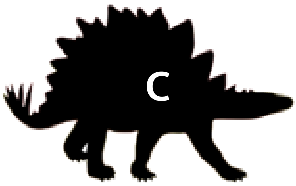

6.

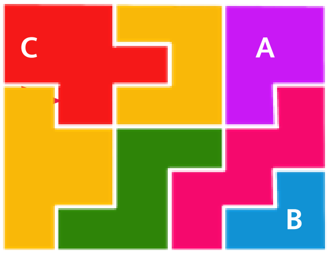

7. चित्र में दिखाए गए पथ पर दी गई संख्याओं को जोड़ने पर (9 + 6 + 8 + 9 + 7 = 39) सबसे बड़ा योगफल मिलेगा।

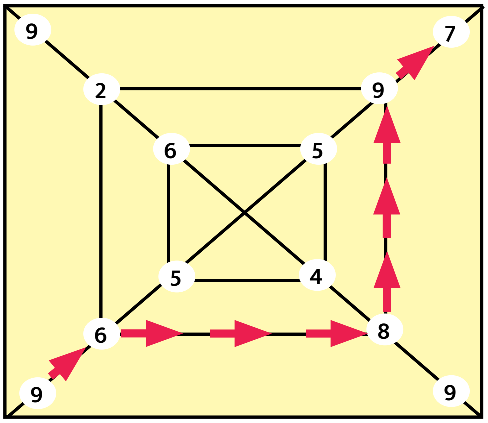

सितम्बर की चित्रपहेली का जवाब

1 बा	इ	2 क		3 क	ट्टा		4 बी	5 स
ज़ा		6 ट	ख	ना		7 बा	ज	रा
र		ह		8 त	9 रा	जू		य
	10 क	ल	11 छा		श		12 ब	
	म		13 ज	वा	न		14 क	द्दू
15 गु	ल	दा	न			16 मो	री	
	क			17 द	इ	बा		18 कि
	19 क	च	ना	र		20 इ	शा	रा
21 चू	ड़ी			ज़ी		ल		ना

सुडोकू-46 का जवाब

1	9	5	2	7	8	3	6	4
2	3	6	4	5	1	8	9	7
8	7	4	3	6	9	2	1	5
3	1	7	5	9	6	4	2	8
6	4	2	8	3	7	9	5	1
5	8	9	1	2	4		7	3
9	2	1	7	8	3	5	4	6
4	5	8	6	1	2	7	3	9
7	6	3	9	4	5	1	8	2

कविता का एक अंश

अण्डे दी गल!

एक चोंच झाँके पहले
फिर सिर झाँकता है
कहाँ आ गया, टुकुर-टुकुर
हर तरफ ताकता है

मुर्गी खुश है उसने
चूज़ी को एक झप्पी दी
गाल पे, चोंच पे, पंखों पे
पप्पी पर पप्पी दी

अण्डे की चिपचिप से
चूज़ी अभी ज़रा गीली थी
माँ ने चोंच से पोंछा, अब
वह एकदम खिली-खिली थी

दिन बीते अब चूज़ी
सरपट दौड़ लगाती थी
क्या अनाज, कीड़े क्या मकोड़े
सब कुछ खा जाती थी

कविता कंचन शाईन
चित्र राधिका टिपणीस
अँग्रेज़ी से अनुवाद सुशील शुक्ल

जीवन चक्र को बताती कंचन शाईन की कविताओं और राधिका टिपणीस के खूबसूरत चित्रों से सजी चार किताबें।

ज्योत्सना प्रकाशन द्वारा अँग्रेज़ी में प्रकाशित इन किताबों का बेहतरीन अनुवाद सुशील शुक्ल ने किया है और एकलव्य प्रकाशन ने इन्हें हिन्दी में प्रकाशित किया है।

इन किताबों को तुम
https://www.pitarakart.in
से मँगवा सकते हैं।

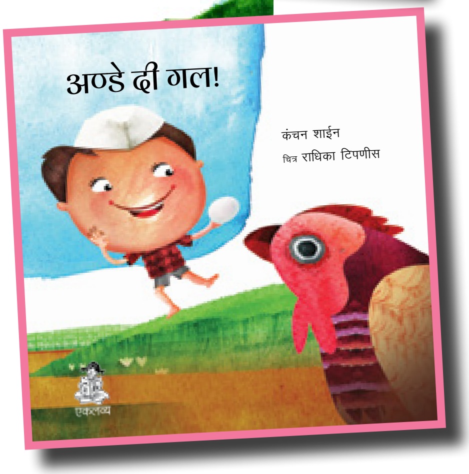

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

जंगली जानवरों से सीखें इको-फ्रेंडली दीवाली मनाना

रोहन चक्रवर्ती
अनुवाद: सजिता नायर

जुगनू

-बस रोशनी ही रोशनी हो, शोर नहीं।

मधुबाज़

-ईस्ट हो या वेस्ट, आसपास की मिठाई सबसे बेस्ट।

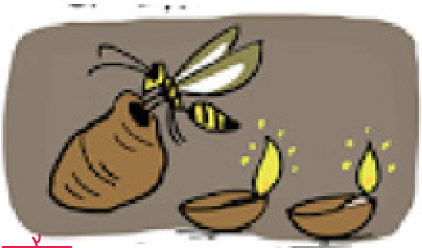

कुम्हार ततैया

-असली मिट्टी का दिया लाए हर घर उजाला

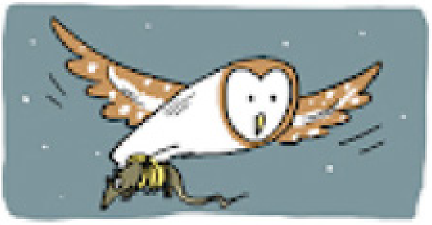

करैल उल्लू

-शोर कम, खुशियाँ ज़्यादा

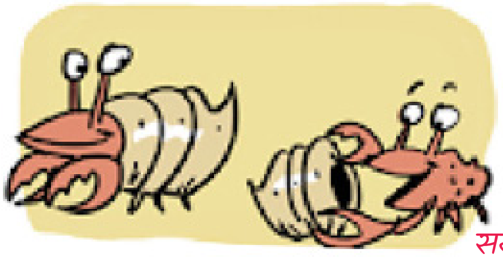

सन्यासी केंकड़े

-तुम्हारे पुराने कपड़े, किसी और के नए कपड़े हैं।

दस्तखत मकड़ी

-फूल-पत्तियों का है कहना, हमारी रंगोली बेस्ट है ना?

लंगूर

-पड़ोसी के साथ पटाखे नहीं प्यार की झप्पी और तोहफे बाँटो।

दूधराज

-सूट लिया जो पिछले साल, लगे इस दीवाली भी कमाल

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन